Date – 30/07/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's College, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – IV (Hons.)

Topic – : Theory of Knowledge: Mimamsa Philosophy

Scanned with CamScanner

ज्ञान - सिद्धान्त (Theory of Knowledge)

प्रमाण - विवेचन

मीमांसा दर्शन का मुख्य ग्रन्थ वेदों के प्रामाण्य को स्थापित करना है। इस ग्रन्थ की सिद्धि के लिए विभिन्न प्रमाणों की विवेचना की गई है। मीमांसा दर्शन के प्रमाण विचार को वेदान्त दर्शन में भी मान्यता मिली है।

मीमांसा दर्शन में प्रमाणों की संख्या को लेकर मतभेद है। मीमांसा दर्शन के प्रणेता महर्षि जैमिनि तीन प्रमाणों को स्वीकार करते हैं। ये तीन प्रमाण हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द। प्रभाकर इन तीन प्रमाणों के अतिरिक्त उपमान और अर्थापत्ति को भी प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं। कुमारिल इन पांच प्रमाणों के साथ-साथ अनुपलब्धि को छठें प्रमाण के रूप में स्वीकार करते हैं।

इन विभिन्न प्रमाणों का विवेचन निम्न रूप से किया गया है।

1. प्रत्यक्ष (Perception)

प्रभाकर प्रत्यक्ष को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि- "साक्षात् प्रतीतिः प्रत्यक्षम्" अर्थात् साक्षात प्रतीति ही प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष ज्ञान के संबंध में प्रभाकर 'त्रिपुटीप्रत्यक्षवाद' का प्रतिपादन करते हैं। इसके अनुसार किसी भी विषय के प्रत्यक्षीकरण में ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय तीनों का प्रत्यक्ष होता है। जैसे- "मैं घट को जानता हूँ" इस प्रत्यक्ष ज्ञान में 'घट' (ज्ञेय), 'मैं' (ज्ञाता) तथा 'घट का ज्ञान' तीनों का एक साथ बोध होता है। इसी इसीलिए इनके ज्ञान संबंधी मत को "त्रिपुटी- प्रत्यक्षवाद" कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

कुमारिल के अनुसार कारण-दोषरहित और अबाधित इन्द्रिय एवं अर्थ के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान प्रत्यक्ष है।

मीमांसा दर्शन का प्रत्यक्ष निरूपण न्याय के प्रत्यक्ष-विचार के प्रायः समरूप है। फिर भी निम्न बिन्दुओं पर वह न्याय-दर्शन से भिन्न है।

(1) न्याय दर्शन के विपरीत मीमांसा निर्विकल्पक प्रत्यक्ष में प्रवृत्ति सामर्थ्य मानता है। इसके आधार पर व्यवहार हो सकता है।

(2) न्याय दर्शन में छः सन्निकर्ष माने गए हैं। ये हैं - संयोग, संयुक्त समवाय, संयुक्त समवेत समवाय, समवाय, समवेत समवाय, विशेषण-विशेष्य भाव। मीमांसा दर्शन इनमें से तीन ही सन्निकर्ष को स्वीकार करता है। ये हैं संयोग, संयुक्त तादात्म्य, संयुक्त तादात्मय तादात्मय सन्निकर्ष। उल्लेखनीय है कि मीमांसा समवाय के स्थान पर तादात्म्य सम्बन्ध को स्वीकार करता है।

Scanned with CamScanner